श्रीवर्धमानाय नमः ।

स्वर्गीय पण्डित दौलतरामजी विरचित

जैन-क्रियाकोष

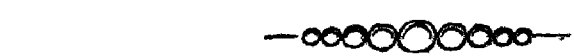

मंगल ।

दोहा—प्रणमि जिनंद मुनिंदको, नमि जिनवर मुखवानि ।
क्रियाकोष भाषा कहूं, जिन आगम परवानि ॥१॥
मोक्ष न आतम ज्ञान बिन, क्रिया ज्ञान बिन नाहिं ।
ज्ञान विवेक बिना नहीं, गुन विवेकके माहिं ॥२॥
नहिं विवेक जिनमत बिना, जिनमत जिन बिन नाहिं ।
मोक्षमूल निर्मल महा, जिनवर त्रिभुवन माहिं ॥३॥
तातें जिनको बंदना, हमरी बारं बार ।
जिनतैं आपा पाइये, तीन भुवनमें सार ॥४॥
द्वीप अढ़ाईके विषैं, आरज क्षेत्र अनूप ।
सौ ऊपर सत्तरि सबैं, वृत्तभूमि शुभरूप ॥५॥
जिनमें उपजे जिनवरा, व्रत्त विधान निरूप ।
कबहूं इक इक क्षेत्रमें, इक इक हूवे जिनभूप ॥ ६ ॥
तब सत्तरि सौ ऊपरें, उत्कृष्टे भुवनेस ।
तिनमें महा विदेहमें, अस्सी दूण असेस ॥ ● ॥